चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	18.1.21	9	6-8

सरसों में कीटों की पहचान व रोकथाम से बढ़ाए पैदावार

■ कम खर्च में अधिक लाभ देती है सरसों की फसल

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ हिसार

सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं।

हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। अगेती सरसों में चित्तकबरा कीड़ा

(थोलिया) अधिक हानि पहुंचाता है तथा पछेती सरसों में चेंपा का अधिक प्रकोप रहता है।

इसलिए किसानों को इन फसलों की तापक्रम व मौसम की अनुकूल परिस्थिति को ध्यान में रखकर बिजाई करनी पड़ती है। किसान सरसों के कीटों को अच्छी तरह पहचान कर उन पर नियंत्रण कर सकते है। हकृवि कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय से जुड़कर और वैज्ञानिक सलाह लेकर समय-समय पर अपनी फसलों संबंधी जानकारी हासिल कर सकते हैं और अपनी फसलों की पैदावार में बढ़ोतरी कर सकते हैं। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके पाहुजा के अनुसार अगेती तथा पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार के कीटों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	17.11.2021	--	--

समस्त हरियाणा — बुधवार, 17 नवम्बर, 2021 — हिसार

सरसों में कीटों की पहचान व रोकथाम से बढ़ा सकते हैं पैदावार

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। अगेती सरसों में चितकबरा कीड़ा (धोलिया) अधिक हानि पहुंचाता है तथा पछेती सरसों में चेपा का अधिक प्रकोप रहता है। इसलिए किसानों को इन फसलों की तापक्रम व मौसम की अनुकूल परिस्थिति को ध्यान में रखकर बिजाई करनी पड़ती है। किसान सरसों के कीटों को अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से नियंत्रण कर सकते हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय से जुड़कर और वैज्ञानिक सलाह लेकर समय-समय पर अपनी फसलों संबंधी जानकारी हासिल कर सकते हैं और अपनी फसलों की पैदावार में बढ़ोतरी कर सकते हैं। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार के कीटों का प्रकोप हो सकता है, जिनको किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। डॉ. रामअवतार व डॉ. दलीप कुमार ने बताया कि सभी कीटनाशकों का छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं।

> चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय से जुड़कर और वैज्ञानिक सलाह लेकर समय-समय पर अपनी फसलों संबंधी जानकारी हासिल कर सकते हैं और फसलों की पैदावार में बढ़ोतरी कर सकते हैं

चितकबरा कीट या धोलिया

यह सरसों का मुख्य कीट है जिसके शिशु व प्रौढ़ पौधों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं। इसके शिशु व प्रौढ़ अण्डाकार होते हैं जिनके उदर पर काले भूरे धब्बे होते हैं। यह पौधों के विभिन्न भागों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं जिसके कारण पौधे की पत्तियों पर सफेद धब्बे बन जाते हैं। इसलिए इस कीट को धोलिया भी कहते हैं। इसके अधिक आक्रमण से पौधे सूख जाते हैं। कीट का प्रकोप फसल की प्रारंभिक अवस्था व कटाई के समय अधिक होता है। अधिक सर्दी में वयस्क अवस्था में निष्क्रिय रहता है। फसल उगने के समय इस कीट का आक्रमण होने पर 200 मि.ली. तथा फसल कटाई के समय होने पर 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. का 200 व 400 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

सरसों की आरा मक्खी

यह हाइमेनोप्टेरा वर्ग का एकमात्र हानिकारक कीट है जो फसल को नुकसान पहुंचाता है। इस कीट की गहरे रंग की सूंडी पत्तियों में छेद करके तथा नई प्ररोह को काटकर हानि पहुंचाती है। इसकी सुण्डी दिन के समय छिपी रहती है। छेड़ने पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे मरी पड़ी हो। इसके उदर के ऊपरी भाग पर पांच काले रंग की पट्टियां होती हैं।

सरसों का माहू/चेपा/अल

इस कीट के शिशु व प्रौढ़ समूह में रहकर पौधों पर आक्रमण करते हैं जिससे फलियां व तना चिपचपा हो जाता है। फलियों में दाने नहीं बन पाते हैं और दाने बनते भी हैं तो कमजोर बनते हैं। यह कीट हल्के हरे रंग का होता है। जो कभी पंख रहित व कभी पंख सहित होता है जो फरवरी-मार्च माह में उड़ते भी दिखते हैं। इस कीट की संख्या दिसम्बर से मार्च माह तक प्रचुर मात्रा में होती है। कीट बिना निषेचन के ही सीधे शिशु पैदा करते हैं।

रोकथाम

इनकी रोकथाम के लिए किसान सरसों फसल की बिजाई अधिक देरी से न करें और आक्रमण होने पर कीटग्रस्त टहनियों को तोड़कर नष्ट कर दें। यदि कीट का आर्थिक स्तर 10 प्रतिशत पुष्पित पौधों पर 9-19 कीट या औसतन 13 कीट प्रति पौधा होने पर 250 से 400 मि.ली. (मिथाइल डेमेटान मेटासिस्टॉक्स) 25 ई.सी. या डाइमेथोएट (रोगोर) 30 ई.सी. को 250 से 400 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर दूसरा छिड़काव 15 दिन बाद करें।

सुरंग बनाने वाली सूण्डी

इस कीट की सूंडियां पत्तियों में सुरंग बनाकर हरे पदार्थ को खाती हैं। पत्ता सूर्य की तरफ करने पर कीट साफ दिखाई देता है। पौधे कमजोर हो जाते हैं तथा उत्पादन पर भी असर पड़ता है। माहू/अल की रोकथाम हेतु बताए गए कीटनाशक से इसे आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है।

बालों वाली सूंडियां

इन सूंडियों का आक्रमण अक्तूबर से नवंबर में अधिक होता है। बड़े होने पर अकेले रहकर सारे खेत में फैल जाती हैं। ऐसी पत्तियां जिन पर सूंडियां समूह में हों उन्हें तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	17.11.21		--

सरसों में कीटों की पहचान व रोकथाम से बढ़ा सकते हैं पैदावार

कम खर्च में अधिक लाभ देती है सरसों की फसल

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 17 नवम्बर : सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। अगेती सरसों में चितकबरा कीड़ा (धोलिया) अधिक हानि पहुंचाता है तथा पछेती सरसों में चेपा का अधिक प्रकोप रहता है। इसलिए किसानों को इन फसलों की तापक्रम व मौसम की अनुकूल परिस्थिति को ध्यान में रखकर बिजाई करनी पड़ती है। किसान सरसों के कीटों को अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से नियंत्रण कर सकते हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय से जुडकर और वैज्ञानिक सलाह लेकर समय-समय पर अपनी फसलों संबंधी जानकारी हासिल कर सकते हैं और अपनी फसलों की पैदावार में बढ़ोतरी कर सकते हैं। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार के कीटों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। डॉ. रामअवतार व डॉ. दलीप कुमार ने बताया कि सभी कीटनाशकों का छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं।

चित्तकबरा कीट या धोलिया : यह सरसों का मुख्य कीट है जिसके शिशु व प्रौढ़ पौधों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं। इसके शिशु व प्रौढ़ अण्डाकार होते हैं जिनके उदर पर काले भूरे धब्बे होते हैं। यह पौधों के विभिन्न भागों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं जिसके कारण पौधे की पत्तियों पर सफेद धब्बे बन जाते हैं। इसलिए इस कीट को धोलिया भी कहते हैं। इसके अधिक आक्रमण से पौधे सूख जाते हैं। कीट का प्रकोप फसल की प्रारंभिक अवस्था व कटाई के समय अधिक होता है। अधिक सर्दी में वयस्क अवस्था में निष्क्रिय रहता है। फसल उगने के समय इस कीट का आक्रमण होने पर 200 मि.ली. तथा फसल कटाई के समय होने पर 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. का 200 व 400 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

सरसों की आरा मक्खी : यह हाइमेनोप्टरा वर्ग का एकमात्र हानिकारक कीट है जो फसल को नुकसान पहुंचाता है। इस कीट की गहरे रंग की सूंडी पत्तियों में छेद करके तथा नई प्ररोह को काटकर हानि पहुंचाती है। इसकी सूण्डी दिन के समय छिपी रहती है। छेड़ने पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे मरी पड़ी हो। इसके उदर के ऊपरी भाग पर पांच काले रंग की पट्टियां होती हैं।

सरसों का माहू/चेपा/अल : इस कीट के शिशु व प्रौढ़ समूह में रहकर पौधों पर आक्रमण करते हैं जिससे फलियां व तना चिपचपा हो जाता है। फलियों में दाने नहीं बन पाते हैं और दाने बनते भी हैं तो कमजोर बनते हैं। यह कीट हल्के हरे रंग का होता है। जो कभी पंख रहित व कभी पंख सहित होता है जो फरवरी-मार्च माह में उड़ते भी दिखते हैं। इस कीट की संख्या दिसम्बर से मार्च माह तक प्रचुर मात्रा में होती है। कीट बिना निषेचन के ही सीधे शिशु पैदा करते हैं।

रोकथाम : इनकी रोकथाम के लिए किसान सरसों फसल की बिजाई अधिक देरी से न करें और आक्रमण होने पर कीटग्रस्त टहनियों को तोडकर नष्ट कर दें। यदि कीट का आर्थिक स्तर 10 प्रतिशत पुष्पित पौधों पर 9-19 कीट या औसतन 13 कीट प्रति पौधा होने पर 250 से 400 मि.ली. (मिथाइल डेमेटान मैटासिस्टॉक्स) 25 ई.सी. या डाइमेथोऐट (रोगोर) 30 ई.सी. को 250 से 400 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिडकाव करें। आवश्यकता पड़ने पर दूसरा छिड़काव 15 दिन बाद करें।

सुरंग बनाने वाली सूण्डी : इस कीट की सूंडियां पत्तियों में सुरंग बनाकर हरे पदार्थ को खाती हैं। पत्ता सूर्य की तरफ करने पर कीट साफ दिखाई देता है। पौधे कमजोर हो जाते हैं तथा उत्पादन पर भी असर पड़ता है। माहू/अल की रोकथाम हेतु बताए गए कीटनाशक से इसे आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है।

बालों वाली सूंडियां : इन सूंडियों का आक्रमण अक्तूबर से नवंबर में अधिक होता है। आरंभ में यह सूंडियां सामूहिक रूप में रहकर फसल की पत्तियों को खा जाती हैं। बड़े होने पर अकेले रहकर सारे खेत में फैल जाती हैं। ऐसी पत्तियां जिन पर सूंडियां समूह में हों उन्हें तोडकर नष्ट कर देना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	17.11.2021	--	--

सरसों में कीटों की पहचान व रोकथाम से बढ़ सकती है पैदावारः कुलपति प्रो. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। अगेती सरसों में चितकबरा कीड़ा (धोलिया) अधिक हानि पहुंचाता है तथा पछेती सरसों में चेपा का अधिक प्रकोप रहता है। इसलिए किसानों को इन फसलों की तापक्रम व मौसम की अनुकूल परिस्थिति को ध्यान में रखकर बिजाई करनी पड़ती है। किसान सरसों के कीटों को अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से नियंत्रण कर सकते हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय से जुड़कर और वैज्ञानिक सलाह लेकर समय-समय पर अपनी फसलों संबंधी जानकारी हासिल कर सकते हैं और अपनी फसलों की पैदावार में बढ़ोतरी कर सकते हैं।

आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार के कीटों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। डॉ. रामअवतार व डॉ. दलीप कुमार ने बताया कि सभी कीटनाशकों का छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं।

चितकबरा कीट या धोलियाः यह सरसों का मुख्य कीट है जिसके शिशु व प्रौढ़ पौधों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं। इसके शिशु व प्रौढ़ अण्डाकार होते हैं जिनके उदर पर काले भूरे धब्बे होते हैं। यह पौधों के विभिन्न भागों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं जिसके कारण पौधे की पत्तियों पर सफेद धब्बे बन जाते हैं। इसलिए इस कीट को धोलिया भी कहते हैं। इसके अधिक आक्रमण से पौधे सूख जाते हैं। कीट का प्रकोप फसल की प्रारंभिक अवस्था व कटाई के समय अधिक होता है। अधिक सर्दी में वयस्क अवस्था में निष्क्रिय रहता है। फसल उगने के समय इस कीट का आक्रमण होने पर 200 मि.ली. तथा फसल कटाई के समय होने पर 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. का 200 व 400 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। सरसों की आरा मक्खीः यह हाइमेनोप्टरा वर्ग का एकमात्र हानिकारक कीट है जो फसल को नुकसान पहुंचाता है। इस कीट की गहरे रंग की सूंडी पत्तियों में छेद करके तथा नई प्ररोह को काटकर हानि पहुंचाती है। इसकी सूण्डी दिन के समय छिपी रहती है। छेड़ने पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे मरी पड़ी हो। इसके उदर के ऊपरी भाग पर पांच काले रंग की पट्टियां होती हैं।

सुरंग बनाने वाली सुण्डी

इस कीट की सुण्डियां पत्तियों में सुरंग बनाकर हरे पदार्थ को खाती हैं। पत्ता सूर्य की तरफ करने पर कीट साफ दिखाई देता है। पौधे कमजोर हो जाते हैं तथा उत्पादन पर भी असर पड़ता है। माहू/अल की रोकथाम हेतु बताए गए कीटनाशक से इसे आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है।

बालों वाली सुंडियां : इन सुंडियों का आक्रमण अक्टूबर से नवंबर में अधिक होता है। आरंभ में यह सुंडियां सामूहिक रूप में रहकर फसल की पत्तियों को खा जाती हैं। बड़े होने पर अकेले रहकर सारे खेत में फैल जाती हैं। ऐसी पत्तियां जिन पर सुंडियां समूह में हों उन्हें तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए।

सरसों का माहू/चेपा/अल

इस कीट के शिशु व प्रौढ़ समूह में रहकर पौधों पर आक्रमण करते हैं जिससे फलियां व दाना विकृत हो जाता है। फलियों में दाने नहीं बन पाते हैं और दाने बनते भी हैं तो कमजोर बनते हैं। यह कीट हल्के हरे रंग का होता है। जो कभी पंख सहित व कभी पंख रहित होता है जो फरवरी-मार्च माह में उड़ते भी दिखते हैं। इस कीट की संख्या दिसम्बर से मार्च माह तक प्रचुर मात्रा में होती है। कीट बिना निषेचन के ही सीधे शिशु पैदा करते हैं।

रोकथामः इसकी रोकथाम के लिए किसान सरसों फसल की बिजाई अधिक देरी से न करें और आक्रमण होने पर कीटग्रस्त टहनियों को तोड़कर नष्ट कर दें। यदि कीट का आर्थिक स्तर 10 प्रतिशत पुष्पित पौधों पर 9-19 कीट या औसतन 13 कीट प्रति पौधा होने पर 250 से 400 मि.ली. (मिथाइल डेमेटान मेटासिस्टॉक्स) 25 ई.सी. या डाइमेथोएट (रोगोर) 30 ई.सी. को 250 से 400 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर दूसरा छिड़काव 15 दिन बाद करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
द इंक न्यूज	18.11. 2021		

NOV
17

AGRICULTURE

सरसों में कीटों की पहचान व रोकथाम कर किसान बढ़ा सकते हैं पैदावार

हिसार(रुद्रा राजेश सिंह कुंडू) – सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। अगेती सरसों में चितकबरा कीड़ा (धोलिया) अधिक हानि पहुंचाता है तथा पछेती सरसों में चेपा का अधिक प्रकोप रहता है। इसलिए किसानों को इन फसलों की तापक्रम व मौसम की अनुकूल परिस्थिति को ध्यान में रखकर बिजाई करनी पड़ती है। किसान सरसों के कीटों को अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से नियंत्रण कर सकते है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय से जुड़कर और वैज्ञानिक सलाह लेकर समय-समय पर अपनी फसलों संबंधी जानकारी हासिल कर सकते हैं और अपनी फसलों की पैदावार में बढ़ोतरी कर सकते हैं। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार के कीटों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। डॉ. रामअवतार व डॉ. दलीप कुमार ने बताया कि सभी कीटनाशकों का छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
भारत सारथी न्यूज	18.11. 2021		

सरसों में कीटों की पहचान व रोकथाम से बढ़ा सकते हैं पैदावार

Nov 17, 2021 चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार, विश्वविद्यालय के कुलपति पोफेसर बी.आर. काम्बोज

कम खर्च में अधिक लाभ देती है सरसों की फसल

हिसार : 17 नंवबर – सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसो वर्गीय फसलो के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसो आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। अगेती सरसो में चितकबरा कीडा (धोलिया) अधिक हानि पहुंचाता है तथा पछेती सरसों में चेपा का अधिक प्रकोप रहता है। इसलिए किसानों को फसलो की तापक्रम व मौसम की अनुकूल परिस्थिति को ध्यान में रखकर बिजाई करनी पडती है। किसान सरसो के कीटो को अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से नियंत्रण कर सकते हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति पोफेसर बी.आर. काम्बोज ने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय से जुड़कर और वैज्ञानिक सलाह लेकर समय-समय पर अपनी फसलों संबंधी जानकारी हासिल कर सकते हैं और अपनी फसलों की पैदावार में बढ़ोतरी कर सकते हैं। आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. पाहुजा के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार के कीटो का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। रामअवतार व डॉ. दलीप कुमार ने बताया कि सभी कीटनाशकों का छिडकाव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं।

चितकबरा कीट या धोलिया : यह सरसों का मुख्य कीट है जिसके शिशु व प्रौढ़ पौधो से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं। इसके शिशु व प्रौढ़ अण्डाकार होते हैं जिनके उदर पर काले भूरे धब्बे होते हैं। पौधो के विभिन्न भागों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं जिसके कारण पौधे की पत्तियों पर सफेद धब्बे बन जाते हैं। इसलिए इस कीट को धोलिया भी कहते हैं। इसके अधिक आक्रमण से पौधे सूख जाते हैं। कीट का प्रकोप फसल की प्रारंभिक अवस्था व कटाई के समय अधिक होता है। अधिक सर्दी में यथस्क अवस्था में निष्क्रिय रहता है। फसल उगने के समय इस कीट का आक्रमण होने पर 200 ग्राम तथा फसल कटाई के समय होने पर 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. का 200 व 400 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

सरसों की आरा मक्खी : यह हाइमेनोप्टरा वर्ग का एकाकार हानिकारक कीट है जो फसल को नुकसान पहुंचाता है। इस कीट की गहरे रंग की सूंडी पत्तियों में छेद करके तथा नई प्ररोह को काटकर हानि पहुंचाती है। इसकी सूण्डी दिन के समय छिपी रहती है। छेड़ने पर ऐसा प्रतीत होता है जैसे मरी पड़ी हो। इसके उदर के ऊपरी भाग पर पांच काले रंग की पट्टियां होती हैं।

सरसों का माहू चेपा अल : इस कीट के शिशु व प्रौढ़ समूह में रहकर पौधो पर आक्रमण करते हैं जिससे पत्तियां व तना चिपचिपा हो जाता है। फलियों में दाने नहीं बन पाते हैं और दाने बनते भी हैं तो कमज़ोर बनते हैं। यह कीट हल्के हरे रंग का होता है। जो कभी पंख रहित व कभी पंख सहित होता है जो फरवरी-मार्च माह में उड़ते भी दिखते हैं। इस कीट की संख्या दिसम्बर से मार्च माह तक प्रचुर मात्रा में होती है। कीट बिना निषेचन के ही सीधे शिशु पैदा करते हैं।

रोकथाम : इसकी रोकथाम के लिए किसान सरसो फसल की बिजाई अधिक देरी से न करे और आक्रमण होने पर कीटग्रस्त टहनियों को तोड़कर नष्ट कर दें। यदि कीट का आर्थिक स्तर 10 प्रतिशत पुष्पित पौधो पर 9-19 कीट या औसतन 13 कीट प्रति पौधा होने पर 250 से 400 मि.ली. (मिथाइल डेमेटान मेटासिस्टॉक्स) 25 ई.सी. या डाइमेथेऐट (रोगोर) 30 ई.सी. को 250 से 400 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर दूसरा छिड़काव 15 दिन बाद करें।

सुरंग बनाने वाली सूण्डी : इस कीट की सूंडियां पत्तियों में सुरंग बनाकर हरे पदार्थ को खाती हैं। पत्ता सूर्य की तरफ करने पर कीट साफ दिखाई देता है। पौधे कमज़ोर हो जाते हैं तथा उत्पादन पर भी असर पड़ता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	18.11.21	6	7-8

एचएयू में रबी फसलों के लिए मेले के बाद भी बीजों की बिक्री जारी

गेहूं व चने की फसलों के लिए सर्टिफाइड बीज उपलब्ध

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से रबी फसलों के लिए मेले के बाद भी बीजों की बिक्री जारी है। इस समय विश्वविद्यालय में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने बताया कि किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बीज बिक्री केंद्र विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 पर स्थित किसान सेवा केंद्र व गेट नंबर-3 के लुदास रोड स्थित फार्म निदेशालय के बिक्री कांउटर पर उपलब्ध होंगे। किसान किसी भी कार्य दिवस पर प्रातः 9 बजे से शाम 5 बजे तक बीज खरीद सकते हैं।

विवि में गेहूं, चना और जौ की विभिन्न किस्मों के बीज उपलब्ध हैं। इस समय बीज बिक्री केंद्र पर चने का एचसी-5 और एचसी-1 का फाउंडेशन बीज 10 किलोग्राम की पैकिंग में 1200 रूपए प्रति बैग के हिसाब से उपलब्ध है। गेहूं की एचडी-3226, एचडी-3086 व एचडी-2967 फाउंडेशन बीज 40 किलोग्राम की पैकिंग में उपलब्ध है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं न्यूज	17.11.21	----	----

एचएयू में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध

हिसार (सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से रबी फसलों के लिए मेले का बाद भी बीजों की बिक्री जारी है। इस समय विश्वविद्यालय में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। यह जानकारी देते हुए कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया कि किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बीज बिक्री केंद्र विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 पर स्थित किसान सेवा केंद्र व गेट नंबर-3 के लुधास रोड स्थित फार्म निदेशालय के बिक्री कांउटर पर उपलब्ध होंगे। किसान किसी भी कार्यदिवस पर प्रातः 9 बजे से सांय 5 बजे तक बीज खरीद सकते हैं। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय की ओर से प्रमाणित बीजों को निर्धारित समयावधि में किसी भी कार्यदिवस

पर खरीद सकते हैं।

इन किस्मों के बीज हैं उपलब्ध

विश्वविद्यालय में मौजूदा समय में गेहूं, चना और जौ की विभिन्न किस्मों के बीज उपलब्ध हैं। इस समय बीज बिक्री केंद्र पर चने का एचसी-5 और एचसी-1 का फाउंडेशन बीज 10 किलोग्राम की पैकिंग में 1200 रुपए के प्रति बैग के हिसाब से उपलब्ध है। गेहूं की एचडी-3226, एचडी-3086 व एचडी-2967 फाउंडेशन बीज 40 किलोग्राम की पैकिंग में उपलब्ध है। इसमें से एचडी-3226 व एचडी-3086 की प्रति बैग कीमत 1680 रुपए जबकि एचडी-2967 प्रति बैग कीमत 1350 रुपए निर्धारित की गई है। इसी प्रकार गेहूं की डब्लयू एच-1105, डब्लयू एच-1124, एचडी-3226 व एचडी-3086 किस्मों का सर्टिफाइड बीज 40 किलोग्राम प्रति बैग 950 रुपए के हिसाब से उपलब्ध है। जौ की बी एच-946 किस्म के बीज का 35 किलोग्राम का बैग 630 रुपए मौजूद है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	17.11.21	--	--

एचएयू में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से रबी फसलों के लिए मेले का बाद भी बीजों की बिक्री जारी है। इस समय विश्वविद्यालय में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। यह जानकारी देते हुए कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया कि किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बीज बिक्री केंद्र विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 पर स्थित किसान सेवा केंद्र व गेट नंबर-3 के लुदास रोड स्थित फार्म निदेशालय के बिक्री कांउटर पर उपलब्ध होंगे। किसान किसी भी कार्यदिवस पर प्रात: 9 बजे से सांय 5 बजे तक बीज खरीद सकते हैं। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय की ओर से प्रमाणित बीजों को निर्धारित समयावधि में किसी भी कार्यदिवस पर खरीद सकते हैं।

इन किस्मों के बीज हैं उपलब्ध

विश्वविद्यालय में मौजूदा समय में गेहूं, चना और जौ की विभिन्न किस्मों के बीज उपलब्ध हैं। इस समय बीज बिक्री केंद्र पर चने का एचसी-5 और एचसी-1 का फाउंडेशन बीज 10 किलोग्राम की पैकिंग में 1200 रूपये के प्रति बैग के हिसाब से उपलब्ध है। गेहूं की एचडी-3226, एचडी-3086 व एचडी-2967 फाउंडेशन बीज 40 किलोग्राम की पैकिंग में उपलब्ध है। इसमें से एचडी-3226 व एचडी-3086 की प्रति बैग कीमत 1680 रूपये जबकि एचडी-2967 प्रति बैग कीमत 1350 रूपये निर्धारित की गई है। इसी प्रकार गेहूं की डब्लयू एच-1105, डब्लयू एच-1124, एचडी-3226 व एचडी-3086 किस्मों का सर्टिफाइड बीज 40 किलोग्राम प्रति बैग 950 रूपये के हिसाब से उपलब्ध है। जौ की बी एच-946 किस्म के बीज का 35 किलोग्राम का बैग 630 रूपये मौजूद है।

किसानों को सुबह 9 से सांय 5 बजे तक किसान सेवा केंद्र व फार्म निदेशालय पर मिलेंगे बीज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	17.11.21		--

एचएयू में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध : प्रो. काम्बोज

टुडे न्यूज। हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से रबी फसलों के लिए मेले का बाद भी बीजों की बिक्री जारी है। इस समय विश्वविद्यालय में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। यह जानकारी देते हुए कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया कि किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बीज बिक्री केंद्र विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 पर स्थित किसान सेवा केंद्र व गेट नंबर-3 के लुदास रोड स्थित फार्म निदेशालय के बिक्री कांउटर पर उपलब्ध होंगे। किसान किसी भी कार्यदिवस पर प्रातः 9 बजे से सांय 5 बजे तक बीज खरीद सकते हैं। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय की ओर से प्रमाणित बीजों को निर्धारित समयावधि में किसी भी कार्यदिवस पर खरीद सकते हैं।

इन किस्मों के बीज हैं उपलब्ध

विश्वविद्यालय में मौजूदा समय में गेहूं, चना और जौ की विभिन्न किस्मों के बीज उपलब्ध हैं। इस

समय बीज बिक्री केंद्र पर चने का एचसी-5 और एचसी-1 का फाउंडेशन बीज 10 किलोग्राम की पैकिंग में 1200 रूपये के प्रति बैग के हिसाब से उपलब्ध है। गेहूं की एचडी-3226, एचडी-3086 व एचडी-2967 फाउंडेशन बीज 40 किलोग्राम की पैकिंग में उपलब्ध है। इसमें से एचडी-3226 व एचडी-3086 की प्रति बैग कीमत 1680 रूपये जबकि एचडी-2967 प्रति बैग कीमत 1350 रूपये निर्धारित की गई है। इसी प्रकार गेहूं की डब्लयू एच-1105, डब्लयू एच-1124, एचडी-3226 व एचडी-3086 किस्मों का सर्टिफाइड बीज 40 किलोग्राम प्रति बैग 950 रूपये के हिसाब से उपलब्ध है। जौ की बी एच-946 किस्म के बीज का 35 किलोग्राम का बैग 630 रूपये मौजूद है।

12

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	17.11.21	--	--

एचएयू में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से रबी फसलों के लिए मेले का बाद भी बीजों की बिक्री जारी है। इस समय विश्वविद्यालय में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। यह जानकारी देते हुए कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया कि किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बीज बिक्री केंद्र विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 पर स्थित किसान सेवा केंद्र व गेट नंबर-3 के लुदास रोड स्थित फार्म निदेशालय के बिक्री कांउटर पर उपलब्ध होंगे। किसान किसी भी कार्यदिवस पर प्रातः 9 बजे से सांय 5 बजे तक बीज खरीद सकते हैं। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय की ओर से प्रमाणित बीजों को निर्धारित समयावधि में किसी भी कार्यदिवस पर खरीद सकते हैं। इन किस्मों के बीज हैं उपलब्ध विश्वविद्यालय में मौजूदा समय में गेहूं, चना और जौ की विभिन्न किस्मों के बीज उपलब्ध हैं। इस समय बीज बिक्री केंद्र पर चने का एचसी-5 और एचसी-1 का फाउंडेशन बीज 10 किलोग्राम की पैकिंग में 1200 रूपये के प्रति बैग के हिसाब से उपलब्ध है। गेहूं की एचडी-3226, एचडी-3086 व एचडी-2967 फाउंडेशन बीज 40 किलोग्राम की पैकिंग में उपलब्ध है। इसमें से एचडी-3226 व एचडी-3086 की प्रति बैग कीमत 1680 रूपये जबकि एचडी-2967 प्रति बैग कीमत 1350 रूपये निर्धारित की गई है। इसी प्रकार गेहूं की डब्लयू एच-1105, डब्लयू एच-1124, एचडी-3226 व एचडी-3086 किस्मों का सर्टिफाइड बीज 40 किलोग्राम प्रति बैग 950 रूपये के हिसाब से उपलब्ध है। जौ की बी एच-946 किस्म के बीज का 35 किलोग्राम का बैग 630 रूपये मौजूद है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	17.11.21	--	--

एचएयू में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से रबी फसलों के लिए मेले का बाद भी बीजों की बिक्री जारी है। इस समय विश्वविद्यालय में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। यह जानकारी देते हुए कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया कि किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बीज बिक्री केंद्र विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 पर स्थित किसान सेवा केंद्र व गेट नंबर-3 के लुदास रोड स्थित फार्म निदेशालय के बिक्री काउंटर पर उपलब्ध होंगे। किसान किसी भी कार्यदिवस पर प्रातः 9 बजे से सांय 5 बजे तक बीज खरीद सकते हैं। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय की ओर से प्रमाणित बीजों को निर्धारित समयावधि में किसी भी कार्यदिवस पर खरीद सकते हैं।

इन किस्मों के बीज हैं उपलब्ध

विश्वविद्यालय में मौजूदा समय में गेहूं, चना और जौ की विभिन्न किस्मों के बीज उपलब्ध हैं। इस समय बीज बिक्री केंद्र पर चने का एचसी-5 और एचसी-1 का फाउंडेशन बीज 10 किलोग्राम की पैकिंग में 1200 रूपये के प्रति बैग के हिसाब से उपलब्ध है। गेहूं की एचडी-3226, एचडी-3086 व एचडी-2967 फाउंडेशन बीज 40 किलोग्राम की पैकिंग में उपलब्ध है। इसमें से एचडी-3226 व एचडी-3086 की प्रति बैग कीमत 1680 रूपये जबकि एचडी-2967 प्रति बैग कीमत 1350 रूपये निर्धारित की गई है। इसी प्रकार गेहूं की डब्लयू एच-1105, डब्लयू एच-1124, एचडी-3226 व एचडी-3086 किस्मों का सर्टिफाइड बीज 40 किलोग्राम प्रति बैग 950 रूपये के हिसाब से उपलब्ध है। जौ की बी एच-946 किस्म के बीज का 35 किलोग्राम का बैग 630 रूपये मौजूद है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तम हिन्दू	17.11.21		

हकृवि में रबी फसलों के बीज उपलब्ध

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से रबी फसलों के लिए बीजों की बिक्री जारी है। इस समय विश्वविद्यालय में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने बताया कि किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बीज बिक्री केंद्र विश्वविद्यालय के गेट नंबर.4 पर स्थित किसान सेवा केंद्र व गेट नंबर.3 के लुदास रोड स्थित फार्म निदेशालय के बिक्री कांउटर पर उपलब्ध होंगे। किसान किसी भी कार्यदिवस पर बीज खरीद सकते हैं। विश्वविद्यालय में मौजूदा समय में गेहूं, चना और जौ की विभिन्न किस्मों के बीज उपलब्ध हैं। इस समय बीज बिक्री केंद्र पर चने का एचसी.5 और एचसी.1 का फाउंडेशन बीज 10 किलोग्राम की पैकिंग में 1200 रूपये के प्रति बैग के हिसाब से उपलब्ध है। गेहूं की एचडी.3226, एचडी.3086 व एचडी.2967 फाउंडेशन बीज 40 किलोग्राम की पैकिंग में उपलब्ध है। इसमें से एचडी.3226 व एचडी.3086 की प्रति बैग कीमत 1680 रूपये जबकि एचडी.2967 प्रति बैग कीमत 1350 रूपये निर्धारित की गई है। इसी प्रकार गेहूं की डब्लयू एच.1105, डब्लयू एच.1124, एचडी.3226 व एचडी.3086 किस्मों का सर्टिफाइड बीज 40 किलोग्राम प्रति बैग 950 रूपये के हिसाब से उपलब्ध है। जौ की बी एच.946 किस्म के बीज का 35 किलोग्राम का बैग 630 रूपये मौजूद है।

15

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	17.11.21		

एचएयू में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्धः कुलपति प्रो. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से रबी फसलों के लिए मेले का बाद भी बीजों की बिक्री जारी है। इस समय विश्वविद्यालय में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। यह जानकारी देते हुए कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया कि किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बीज बिक्री केंद्र विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 पर स्थित किसान सेवा केंद्र व गेट नंबर-3 के लुदास रोड स्थित फार्म निदेशालय के बिक्री कांउटर पर उपलब्ध होंगे। किसान किसी भी कार्यदिवस पर प्रातः 9 बजे से सांय 5 बजे तक बीज खरीद सकते हैं। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय की ओर से प्रमाणित बीजों को निर्धारित समयावधि में किसी भी कार्यदिवस पर खरीद सकते हैं।

इन किस्मों के बीज हैं उपलब्ध

विश्वविद्यालय में मौजूदा समय में गेहूं, चना और जौ की विभिन्न किस्मों के बीज उपलब्ध है। इस समय बीज बिक्री केंद्र पर चने का एचसी-5 और एचसी-1 का फाउंडेशन बीज 10 किलोग्राम की पैकिंग में 1200 रूपये के प्रति बैग के हिसाब से उपलब्ध है। गेहूं की एचडी-3226, एचडी-3086 व एचडी-2967 फाउंडेशन बीज 40 किलोग्राम की पैकिंग में उपलब्ध है। इसमें से एचडी-3226 व एचडी-3086 की प्रति बैग कीमत 1680 रूपये जबकि एचडी-2967 प्रति बैग कीमत 1350 रूपये निर्धारित की गई है। इसी प्रकार गेहूं की डब्लयू एच-1105, डब्लयू एच-1124, एचडी-3226 व एचडी-3086 किस्मों का सर्टिफाइड बीज 40 किलोग्राम प्रति बैग 950 रूपये के हिसाब से उपलब्ध है। जौ की बी एच-946 किस्म के बीज का 35 किलोग्राम का बैग 630 रूपये मौजूद है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	17.11..21		

एचएयू में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध : प्रो. बी.आर. काम्बोज

किसानों को सुबह 9 से सांय 5 बजे तक किसान सेवा केंद्र व फार्म निदेशालय पर मिलेंगे बीज

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 17 नवम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से रबी फसलों के लिए मेले का बाद भी बीजों की बिक्री जारी है। इस समय विश्वविद्यालय में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। यह जानकारी देते हुए कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया कि किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बीज बिक्री केंद्र विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 पर स्थित किसान सेवा केंद्र व गेट नंबर-3 के लुदास रोड स्थित फार्म निदेशालय के बिक्री कांउटर पर उपलब्ध होंगे। किसान किसी भी कार्यदिवस पर प्रातः 9 बजे से सांय 5 बजे तक बीज खरीद सकते हैं। उन्होंने किसानों से आहवान किया कि वे विश्वविद्यालय की ओर से प्रमाणित बीजों को निर्धारित समयावधि में किसी भी कार्यदिवस पर खरीद सकते हैं।

इन किस्मों के बीज हैं उपलब्ध

विश्वविद्यालय में मौजूदा समय में गेहूं, चना और जौ की विभिन्न किस्मों के बीज उपलब्ध हैं। इस समय बीज बिक्री केंद्र पर चने का एचसी-5 और एचसी-1 का फाउंडेशन बीज 10 किलोग्राम की पैकिंग में 1200 रूपये के प्रति बैग के हिसाब से उपलब्ध है। गेहूं की एचडी-3226, एचडी-3086 व एचडी-2967 फाउंडेशन बीज 40 किलोग्राम की पैकिंग में उपलब्ध है। इसमें से एचडी-3226 व एचडी-3086 की प्रति बैग कीमत 1680 रूपये जबकि एचडी-2967 प्रति बैग कीमत 1350 रूपये निर्धारित की गई है। इसी प्रकार गेहूं की डब्लयू एच-1105, डब्लयू एच-1124, एचडी-3226 व एचडी-3086 किस्मों का सर्टिफाइड बीज 40 किलोग्राम प्रति बैग 950 रूपये के हिसाब से उपलब्ध है। जौ की बी एच-946 किस्म के बीज का 35 किलोग्राम का बैग 630 रूपये मौजूद है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
भारत सारथी न्यूज	18.11. 2021		

एचएयू में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

किसानों को सुबह 9 से सांय 5 बजे तक किसान सेवा केंद्र व फार्म निदेशालय पर मिलेंगे बीज

हिसार : 17 नवंबर – चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से रबी फसलों के लिए मेले का बाद भी बीजों की बिक्री जारी है। इस समय विश्वविद्यालय में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। यह जानकारी देते हुए कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने बताया कि किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बीज बिक्री केंद्र विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 पर स्थित किसान सेवा केंद्र व गेट नंबर-3 के लुद्दास रोड स्थित फार्म निदेशालय के बिक्री कांउटर पर उपलब्ध होंगे। किसान किसी भी कार्यदिवस पर प्रात: 9 बजे से सांय 5 बजे तक बीज खरीद सकते हैं। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय की ओर से प्रमाणित बीजों को निर्धारित समयावधि में किसी भी कार्यदिवस पर खरीद सकते हैं।

इन किस्मों के बीज हैं उपलब्ध

विश्वविद्यालय ने मौजूदा समय में गेहूं, चना और जौ की विभिन्न किस्मों के बीज उपलब्ध हैं। इस समय बीज बिक्री केंद्र पर चने का एचसी-5 और एचसी-1 का फाउंडेशन बीज 10 किलोग्राम की पैकिंग में 1200 रुपये के प्रति बैग के हिसाब से उपलब्ध है। गेहूं की एचडी-3226, एचडी-3086 व एचडी-2967 फाउंडेशन बीज 40 किलोग्राम की पैकिंग में उपलब्ध है। इसमें से एचडी-3226 व एचडी-3086 की प्रति बैग कीमत 1680 रुपये जबकि एचडी-2967 प्रति बैग कीमत 1350 रुपये निर्धारित की गई है। इसी प्रकार गेहूं की डब्लयू एच-1105, डब्लयू एच-1124, एचडी-3226 व एचडी-3086 किस्मों का सर्टिफाइड बीज 40 किलोग्राम प्रति बैग 950 रुपये के हिसाब से उपलब्ध है। जौ की बी एच-946 किस्म के बीज का 35 किलोग्राम का बैग 630 रुपये मौजूद है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	18.11.21	3	3-8

शिविर

एचएयू कुलपति बोले - कम खर्च में अधिक लाभ देती हैं सरसों की फसल

सरसों में कीटों की पहचान व रोकथाम से बढ़ा सकते हैं पैदावार

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं।

अगेती सरसों में चित्तकबरा कीड़ा (धोलिया) अधिक हानि पहुंचाता है और पछेती सरसों में चेपा का अधिक प्रकोप रहता है। किसान सरसों के कीटों को अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से नियंत्रण कर सकते हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने किसानों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय से जुड़कर और वैज्ञानिक सलाह लेकर समय-समय पर अपनी फसलों संबंधी जानकारी हासिल कर सकते हैं और अपनी फसलों की पैदावार में बढ़ोतरी कर सकते हैं। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके पाहुजा के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार के कीटों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं।

सून्डी। संवाद

चित्तकबरा कीट या धोलिया : यह सरसों का मुख्य कीट है, जिसके शिशु व प्रौढ़ पौधों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं। इस कीट को धोलिया भी कहते हैं। फसल उगने के समय इस कीट का आक्रमण होने पर 200 मिली, फसल कटाई के समय होने पर 400 मिली मैलाथियान 50 ईसी का 200 व 400 लीटर पानी प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

एचएयू में गेहूं, चना और जौ के सर्टिफाइड बीज उपलब्ध

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से रबी फसलों के लिए मेले के बाद भी बीजों की बिक्री जारी है। इस समय विश्वविद्यालय में गेहूं, चना व जौ की फसलों के फाउंडेशन व सर्टिफाइड बीज उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बीज बिक्री केंद्र विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 स्थित किसान सेवा केंद्र व गेट नंबर-3 के लुदास रोड स्थित फार्म निदेशालय के बिक्री कांउटर पर उपलब्ध होंगे। किसान किसी भी कार्य दिवस पर सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक बीज खरीद सकते हैं।

इन किस्मों के बीज हैं उपलब्ध : विश्वविद्यालय में मौजूदा समय में गेहूं, चना और जौ की विभिन्न किस्मों के बीज उपलब्ध हैं। इस समय बीज बिक्री केंद्र पर चने का एचसी-5 और

किसानों को सुबह 9 से शाम 5 बजे मिलेंगे बीज

एचसी-1 का फाउंडेशन बीज 10 किलोग्राम की पैकिंग में 1200 रुपये के प्रति बैग के हिसाब से उपलब्ध है। गेहूं की एचडी-3226, एचडी-3086 व एचडी-2967 फाउंडेशन बीज 40 किलोग्राम की पैकिंग में उपलब्ध है। इसमें से एचडी-3226 व एचडी-3086 की प्रति बैग कीमत 1680 रूपये जबकि एचडी-2967 प्रति बैग कीमत 1350 रुपये निर्धारित की गई है। इसी प्रकार गेहूं की डब्लयु एच-1105, डब्लयू एच-1124, एचडी-3226 व एचडी-3086 किस्मों का सर्टिफाइड बीज 40 किलोग्राम प्रति बैग 950 रूपये के हिसाब से उपलब्ध है। जौ की बीएच-946 किस्म के बीज का 35 किलोग्राम का बैग 630 रुपये मौजूद है। ब्यूरो